International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 21-06-2021, Accepted: 03-07-2021, Published: 21-07-2021
Volume 7; Issue 4; 2021; Page No. 35-37

ग्रामीण राजनीति में मतदान व्यवहार का स्वरूप

डॉ. प्रेमसिंह रावलोत[1], सुश्री कुसुम लता पुरोहित[2]

[1] सह आचार्य, लोकप्रशासन विभाग, भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

[2] शोधार्थी, लोकप्रशासन विभाग, भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

जनतंत्र की सुदृढता और भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि इस क्षेत्र में मतदाताओं का दृष्टिकोण कितना व्यापक है, अर्थात् मतदान व्यवहार कैसा ळें संवैधानिक रूप से भारत एक समाजवादी लोकत्रान्त्रिक गणराज्य है और लगभग प्रत्येक नागरिक भारतीय लोकतंत्र को मजबूत व प्रभावशाली बनाने के लिए निर्वाचन के माध्यम से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। भारत ऐसा देश है जिसकी आत्मा गांवों को ही माना जाता है।भारतीय संस्कृति का उद्भव केन्द्र गांव ही है अतः राजनीतिक दृष्टि से ग्रामीण मतदाताओं के मतदान व्यवहार का अध्ययन महत्वपूर्ण है।वैसे तो मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक–जाति, धर्म, वर्ग, क्षेत्रीयता, सामाजिक–आर्थिक परिवेश नेतृत्व,दल तथा कई राष्ट्रीय एवं स्थानीय कारक है। ये कारक ग्रामीण राजनीति के मतदान व्यवहार को किस प्रकार प्रभावित करते है? यह जानना महत्वपूर्ण है।

मूलशब्द: ग्रामीण राजनीति, मतदान व्यवहार, लोकतंत्र, निर्वाचन।

प्रस्तावना

दूनियाभर में बहुत सी शासन व्यवस्थाएं पाई जाती है।परंतु लोकतंत्र उनमे से सर्वाधिक महत्वपूर्ण शासन व्यवस्था है, भारत में सर्वाधिक वैधता पूर्ण शासन प्रणाली के रूप में स्वीकार किया गया है। लोकतंत्र की सफलता नागरिकों की सक्रियता व सचेतनता पर निर्भर करती है नागरिक राजनीति में प्रत्यक्ष रूप से अपनी भागीदारी का निर्वाह करते है । राजनीति से प्रभावित होकर नागरिक मतदाता के रूप में जो निर्णय लेते है उसी को मतदान व्यवहार कहा जाता है।मतव्यवहार का अध्ययन चुनावों के अध्ययनों का एक हिस्सा है।चुनावों के अध्ययन के एक हिस्से को सोफोलॉजी कहते है,इसका उद्देश्य चुनावों के दौरान मतदाताओं के व्यवहार के बारे में प्रश्नों का विश्लेषण करना होता है। मतदाता किस उम्मीदवार को वोट देते है? या वे चुनाव में एक ही पार्टी को पसंद क्यों करते है? इसके अलावा और भी अन्य कारक है जिन पर मतदान निर्धारकों के संबंध में मानव शास्त्री मीडिया हाउस और राजनीतिक दल चुनावी अध्ययनों में लगे हुए है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 1951–52 के प्रथम आम चुनावों के समय से 1950 के दशक में चुनावी अध्ययन शुरू हुए। लेकिन व्यवस्थित तरीके से चुनावी अध्ययन 1960 के दशक से शुरू हुए। रजनी कोठारी तथा माइनर वीनर जैसे विद्वानों ने इसे शुरू किया।1980 के दशक में प्रणय रॉय और अशोक लाहिरि की पुस्तक ने इसे नई गति प्रदान की।लेकिन 1990 के दशक से ही चुनावों का अध्ययन निर्बाध गति से हो रहा है।इसके प्रमुख कारण लोकसभा तथा विधानसभा के चुनावों में निरंतर हो रही मत प्रतिशत की वृद्धि हैं।

वर्तमान में भारत में सामाजिक और सांस्कृतिक परिपेक्ष्य में गांवों का विशेष महत्व हैं।राजनीतिक परिपेक्ष्य में यह महत्व ओर भी बढ जाता है। ग्रामपंचायतो तथा नगरपालिका के गठन ने कहीं न कही ग्रामीण राजनीति को उच्च स्तर पर ला दिया है। ग्रामीण राजनीति में मतदान व्यवहार का सूक्ष्म अवलोकन करने के लिए पंचायतों, विधानसभाओं तथा लोकसभा तीनों ही स्तर पर अध्ययन किया जाता हैं। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक मत प्रतिशत पंचायत के चुनावों में ही होता हैं। जहां लोकसभा चुनावों में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दे मतदान व्यवहार को प्रभावित करते है तो राज्य विधानसभाओं तथा पंचायत के चुनावों में स्थानीय कारक मतदान व्यवहार को अत्यधिक प्रभावित करते हैं। मीडिया, विद्वतजन और नीति निर्माता अक्सर यह धारणा बनाते हुए नजर आते है कि भारतीय मतदाता को अपेक्षाकृत नासमझ विशेषकर ग्रामीण मतदाताओं के लिए इस प्रकार की धारणा बनायी जाती है और वह केवल अल्पकालीक लक्ष्यों को ही देखता है और उसे आसानी से मुर्ख बनाया जा सकता है।भारतीय चुनाव मण्डल के प्रति ऐसे निराशाजनक दृष्टिकोण का कारण खास तरह की चुनौतियों वाले भारत के प्रति अन्दरूनी धारणा है कि यह देश भयानक गरीबी से लेकर कट्टर सामाजिक वर्णव्यवस्था तक का शिकार होने के कारण एक स्थायी और परिपक्व लोकतंत्र के रूप में विकसित होने में सक्षम नहीं है। यह बात तर्कसंगत तो लगती है लेकिन इसके विपरीत भी बहुत साक्ष्य है। राजनैतिक वैज्ञानिक अर्नेड लिम्फर्ट द्वारा लोकतान्त्रिक स्वतंत्रता के उपायों के आधार पर लिए गए निर्णय के अनुसार सन् 1977 से जिन तैंतीस देशों में लगातार लोकतान्त्रिक व्यवस्था चल रही है, भारत उनमें से एक है। भारत में चुनावों को लेकर कितनी खामियां उजागर हुई है परंतु मतदान प्रतिशत में वृद्धि तथा मतदाताओं की सक्रियता कहीं न कही यह आशा जगाते है कि चुनावों को लेकर सुधार की अपेक्षा की जा सकती हैं।

वास्तव में राजनीतिक व्यवस्था में चुनावों की जटिल भूमिका को निर्वाचकों के मतदान व्यवहार के आधार पर स्पष्ट करना संभव है इसलिए राष्ट्रीय स्तर से लेकर स्थानीय स्तर तक भारत ही नहीं सभी देशों में मतदान आचरण का अध्ययन किया जाता हैं। स्वाभाविक रूप से मतदान व्यवहार में निम्नलिखित कठिनाईयों भी आती है–

1. एक क्षेत्र का मतदान व्यवहार दूसरे क्षेत्र के मतदान व्यवहार से भिन्न होता इसलिए किसी एक क्षेत्र के मतदान व्यवहार के आधार पर इस संबंध में किसी भी प्रकार सामान्य निष्कर्ष निकालना संभव नहीं है।
2. भारत जैसे विविधता वाले देश में कुछ निश्चित शीर्षकों के अन्तर्गत सम्पूर्ण देश के मतदान व्यवहार का अध्ययन नहीं किया जा सकता है।

3. जिन व्यक्तियों का साक्षात्कार लिया जाता है कई बार वे या तो उत्तर नहीं देते है या जानबुझकर ठीक–ठीक उत्तर नहीं देते हैं।
4. कई बार भाषा संबंधी कठिनाईयां भी सामने आती है। जिसे संपुर्ण रूप से दूर किया जाना संभव नहीं हैं।यह तभी दूर हो सकती है जबकि अध्ययन कर्ता लम्बे समय तक किये गए अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष निकाले और उस क्षेत्र की राजनीतिक,सांस्कृतिक,आर्थिक व सामाजिक परिस्थितियों से पूर्णतया परिचित हो।अतः मतदान व्यवहार का अध्ययन बहुत समय धन और परिश्रम की मांग करता है।

ग्रामीण राजनीति में मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक–

ग्रामीण राजनीति के मतदान व्यवहार को जो परिस्थितियां मोटे तौर पर प्रभावित करती है उसको भी निम्नानुसार समझा जा सकता है–

मतदान आचरण निर्वाचन क्षेत्र में रहने वाले मतदाताओं के सामाजिक–आर्थिक परिवेश द्वारा प्रभावित होता है। भारतीय चुनावों में विभिन्न क्षेत्रों के सामाजिक–आर्थिक परिवेश का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। इससे संबंधित कतिपय महत्वपूर्ण कारक निम्नलिखित है–

1. **जातिवादः** भारत में जातिवाद का तथ्य सभी राज्यों में प्रभावी है विशेषकर स्थानीय क्षेत्रों तथा स्थानीय चुनावों में इसका प्रभाव विशेष रूप से परिलक्षित होता है।मतदान व्यवहार में जातिवाद और जातिगत राजनीति का प्रभाव उन जातियों में अधिक पाया जाता है जो किसी क्षेत्र में अपेक्षाकृत बहुसंख्यक है और जो अपने मतों के बल पर अपनी जाति के उम्मीदवारों को जिताने की स्थिति में है। उदाहरण के लिए राजस्थान में जनता से वोट प्राप्त करने के लिए किसी दल ने कभी जाति को मुद्दा नहीं बनाया लेकिन चुनावी गणित हमेशा जातीय आधार पर ही चलता है।
2. **परिवार एवं नातेदारीः** मतदान आचरण को प्रभावित करने में परिवार एवं नातेदारी का प्रमुख व महत्वपूर्ण स्थान है। भारत में परिवार एवं नातेदारी मतदान आचरण को बहुत प्रभावित करते है तथा आज भी अनेक ग्रामीण व नगरीय क्षेत्रों में दलीय वचनबद्धता से परिवार एवं नातेदारी के प्रति निष्ठा कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। ऑस्कर लेविस जैसे पश्चिमी विद्वान इसे प्रजातंत्रीय व्यवस्था के लिए शुभ लक्षण नहीं मानते परंतु ग्रामीण परंपरागत समाज में कुछ समय तक ऐसा होना स्वाभाविक है। आज शिक्षा के स्तर एवं राजनीतिक चेतना में वृद्धि के कारण मतदाता मतदान में व्यक्तिगत निर्णय लेने लगें है तथा यह प्रवृति बढती ही जा रही है फिर भी ऐसे मतदाताओं की संख्या काफी कम है विशेषकर गांवों में।
3. **वर्गः** यद्यपि विभिन्न राजनीतिक दल सभी वर्गों का समर्थन लेने का प्रयास करते है,फिर भी कुछ राजनीतिक दल केवल कुछ विशिष्ट वर्गों के समर्थन पर ही आधारित होते है।कुछ दलों का गठन ही जातीय व वर्गीय आधार पर किया जाता है।
4. **धनः** धन भी मतदान आचरण को प्रभावित करता है। चुनावों में निर्धारित धनराशि से अधिक खर्च करना,चुनाव के समय मतदाताओं को आर्थिक लाभ पहुंचाना अथवा आर्थिक प्रलोभन देना इत्यादि बातों की चर्चा अनेक विद्वानों ने की है।इसके अलावा क्षेत्रीयता,गुटबन्दी,धर्म आदि अनेक कारक मतदान आचरण को प्रभावित करते है।
5. **अन्य सामाजिकः** आर्थिक कारण– जिसमें आयु, लिंग,शिक्षा,आय,व्यवसाय प्रमुख है इन कारकों को जननांकिकीय कारक भी कहा जाता है।

राजनीतिक कारकः हम निम्नलिखित राजनीतिक कारकों को सम्मिलित कर सकते हैं

1. **दलीय नीतियांः** दलीय नीतियां कुछ सीमा तक मतदान आचरण को प्रभावित करती हैं। एक निर्धन देश होने के कारण भारत में अधिकांश राजनीतिक दलों की नीतियां गरीबी एवं अन्य प्रमुख सामाजिक समस्याओं के समाधान से संबंधित है तथा इन्ही के गरीब मतदाताओं के मतदान आचरण को प्रभावित करने का प्रयास किया जाता है।
2. **दलीय संगठनः** दलीय नीतियों के अतिरिक्त सुगठित दलीय संगठन भी मतदान आचरण को प्रभावित करता हैं। सुगठित दल अपने कार्यकर्ताओं के माध्यम से मतदाताओं से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करते है तथा उन्हें दल को समर्थन देने के लिए समझाते हैं।जो दल सुगठित नहीं होते उन्हें कुछ मतदाता समर्थन देने से हिचकते हैं।
3. **राजनीतिक प्रश्नः** चुनाव जिस राजनीतिक प्रश्नों के आधार पर लडा जाता है वे भी मतदान आचरण को प्रभावित करते हैं।यह स्थिति लोकसभा, विधानसभा तथा पंचायत सभी चुनावों में देखने को मिलती है।
4. **दलीय प्रतिबद्धताः** मतदान आचरण को प्रभावित करने वाला एक अन्य कारक दलीय प्रतिबद्धता एवं निष्ठा है। प्रत्येक दल कुछ ऐसे निष्ठावान कार्यकर्ता होते है जो स्वयं दलीय उम्मीदवारों को मत देते है तथा मतदाताओं को भी दलीय समर्थन देने को प्रोत्साहन करते है।
5. **चमत्कारी दलीय नेतृत्वः** यह स्थिति लोकसभा के चुनाव में सर्वाधिक देखने को मिलती हैं।लोग ऐसे नेता को प्रधानमंत्री के रूप में देखने चाहते हैं जो देश को सुदृढ स्थिति प्रदान कर सके। यदि कोई चमत्कारी नेतृत्व राजनीतिक पटल पर उभरता है तो ग्रामीण क्षेत्रों का मतदान व्यवहार भी इस स्थिति से प्रभावित होता हैं।उदाहरण के लिए जवाहरलाल नेहरू,इंदिरा गांधी,नरेन्द्र मोदी जैसे चमत्कारी नेतृत्व को राष्ट्रीय स्तर से लेकर स्थानीय स्तर तक समर्थन प्राप्त हुआ।
6. **अभिजनवादी संस्कृतिः** वैसे तो यह तत्व राष्ट्रीय से लेकर स्थानीय स्तर तक सभी प्रकार के चुनावों में मतदान व्यवहार को प्रभावित करता है।परंतु ग्रामीण क्षेत्रों में ये समाजिक–आर्थिक रूप से मजबूत स्थिति में होते है तथा राजनीति में भी सक्रिय भूमिका निभाते है ऐसे व्यक्तियों का प्रभाव ग्रामीण राजनीति पर पडता है। कई स्थितियों में देखा जाता है कि ऐसे व्यक्ति स्थानीय नेता के रूप में इतने मजबूत स्थिति में होते है कि दलीय राजनीति को भी ये प्रभावित करते है तथा राजनीतिक दलों द्वारा भी इन्हें विशेष से महत्व दिया जाता है।

उपर्युक्त कारकों में से कोई एक कारक स्वयं में मतदान आचरण को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण नहीं है,क्योंकि बहुधा इनमें से अनेक कारक सामूहिक रूप से मतदान आचरण को प्रभावित करते है। विभिन्न कारको के एक–दूसरे के साथ जुडे होने के कारण ही मतदान आचरण का विश्लेषण करना कठिन कार्य माना जाता है।

निष्कर्ष

मतदान आचरण में आधारभूत बात मतदाताओं की जागरूकता है। वे कितनी राजनीतिक समझ रखते है तथा राजनीति में कितनी रूचि लेते है और राजनीतिक सहभागिता के लिए कहां तक आगे बढ सकतें है।यह सब अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। परंतु यहां यह भी समझना आवश्यक है कि मतदाता की राजनीतिक समझ कितनी विकसित है। राष्ट्रीय ही नहीं स्थानीय स्तर पर भी मतदाता स्वयं की समझ से अधिक बाहरी परिस्थितियों तथा कारकों से अत्यधिक प्रभावित होते है।

सन्दर्भ सूची

1. राजनीतिक समाजशास्त्र–डॉ धर्मवीर,राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी
2. राजस्थान की राजनीतिःसामंतवाद से जातिवाद के भंवर में– विजय भण्डारी, वाणी प्रकाशन
3. भारत में राजनीति कल और आज–रजनी कोठारी,वाणी प्रकाशन
4. भारतीय लोकतंत्र में मतदान व्यवहार–डॉ श्रीमती कल्पना वैश्य, नवभारत प्रकाशन
5. भारतीय शासन एवं राजनीति–बी.एल.फडिया एवं पुखराज जैन,साहित्य भवन पब्लिकेशन
6. इण्डिया वोट्स लोकसभा एवं विधानसभा इलेक्शन्स,एम.एस. राणा, बी आर पबिलकेशन्स
7. भारत में मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले निर्धारित तत्वों का विश्लेषणात्मक अध्ययन–अशोक कुमार
8. भारतीय मतदाता के बचाव में– निलांजन सरकार
9. राजस्थान विधानसभा चुनावों में मतदान व्यवहारःकोटा विधानसभा चुनाव 2003 व 2008 का तुलनात्मक अध्ययन–गुलाम रसुल खां,शोध ग्रन्थ